बड़ा बेटा

संदीप सिंह

मोहन बहुत खुश था। उसने अपने से छोटी तीनों बहनों का विवाह करके अपने पिताजी की पूरी सहायता सफलतापूर्वक की थी। अब केवल सबसे छोटी बहन ही रह गई थी विवाह के लिए। मोहन पिछले सोलह वर्षों से एक सैनिक के रूप में देश की सेवा कर रहा था। यह सेवा ही उसके परिवार के आय का एकमात्र स्रोत थी। उससे छोटी चार बहनें थी।

पिताजी एक साधारण किसान थे जो बमुश्किल परिवार की जीविका का प्रबंध कर पाते थे। मोहन अपने मां-बाप का ज्येष्ठ पुत्र था। इसके साथ-साथ ही वह स्वभाव से स्थिर एवं पढ़ने लिखने में भी बहुत अच्छा था। घर की स्थिति देखकर उसे जल्दी ही पता लग गया था कि बढ़ते परिवार का खर्च और बड़ी होती बहनों का विवाह कर पाना पिताजी के लिए बहुत कठिन होगा। इसीलिए उसने इंटरमीडिएट पास करते ही नौकरी की तलाश शुरू कर दी। उसका खपरैल घर भी बहुत पुराना था और लगभग गिर चुका था। पुराने घर की दीवारों पर ही घास-फूस के छप्परों को लगाकर किसी तरह काम चल रहा था। बरसात के मौसम में तो परेशानी कुछ ज्यादा ही बढ़ जाती थी। अनेक जगह से बरसात का पानी घर के अंदर रिस कर आने लगता। घर में रखे सामान, अनाज और कपड़ों इत्यादि को बचाने के लिए और रात भर सही से सो पाने के लिए छप्पर को ऊपर बरसाती से ढकना पड़ता था। मोहन पढ़ने में बहुत अच्छा था उसके अध्यापक उससे एक सम्मानित ओहदे पर नौकरी पाने की अपेक्षा रखते थे। मोहन भी ऐसा ही चाहता था। इसके लिए इंटरमीडिएट पास होने के बाद वह कोचिंग करने के लिए एक बड़े शहर में गया। परंतु, वहां जाने के लिए पैसों को इकट्ठा करने में उसके पिताजी को बड़ी ही मुश्किल परिस्थितियों से गुजरना पड़ा। यह मुश्किल आर्थिक और मानसिक दोनों ही थी। वहां पहुंचने के बाद उसे पता चला कि आगे की पढ़ाई में तो लाखों का खर्च आएगा। उसके पिताजी की क्षमता के अनुसार तो यह खर्च कल्पना से बाहर था। अतः उसने जल्दी ही किसी ऐसी नौकरी को पाने कि कोशिश में लग गया जो जिसके लिए पैसा भी न खर्च करना पड़े और उस नौकरी से कमायी करके वह घर और पिताजी कि मदद भी कर सके। योग्यता तो उसमें थी ही उसी के आधार पर वह आसानी से एक सैनिक के रूप में चयनित हो गया। देश सेवा के रूप में इसी नौकरी से पाने वाले वेतन से से वह अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन सतत रूप से करने लगा। मोहन स्वयं को जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक रखता था। वह सभी कार्यों को योजना बनाकर धैर्य पूर्वक करता था। उसने स्वयं को इच्छाओं से सदा मुक्तप्राय ही रखा। उसने खुद को अपने

 ISSN:2583-8849

परिवार की सेवा के प्रति ही समर्पित बनाए रखा। वह छुट्टियों में जब भी घर पर आता तो स्थानीय लोगों के साथ मेल मिलाप, बातचीत, वेशभूषा सब कुछ बिलकुल साधारण ही रखता। उसके व्यक्तित्व में किसी भी प्रकार का कोई दिखावापन नहीं रहता था। हिंदी, अंग्रेजी अच्छे से बोलने का ज्ञान होने पर भी वह गाँव में सदा गाँव की अवधी बोली ही बोलता। आस पड़ोस के लोग उसकी प्रशंसा करते और अपने बच्चों के लिए उसको एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते। उसके हम उम्र तमाम साथियों को जो मजा अच्छा-अच्छा खाने-पीने, पहनने ओढ़ने या अमीरी दिखाने वाली महंगी चीज खरीदने में आता था उससे ज्यादा मजा मोहन को अपनी जिम्मेदारियां को निभाने में आता था।

मोहन आज खुश था क्योंकि कुछ दिन बाद ही वह अवकाश पर घर जाने वाला था। अब एक बहन ही थी जिसका विवाह करना बाकी था। मोहन ने उसके विवाह के लिए भी पैसे इकट्ठा करने का इंतजाम कर लिया था। वह घर जाकर पापा को आश्वस्त करना चाहता था कि बहन के विवाह के खर्च का इंतजाम उसने कर लिया है। उसे लगता था इसको कर लेने के बाद उसके माता-पिता तनाव मुक्त जीवन जी सकते हैं। छुट्टी का समय आ गया और मोहन घर पर पहुंच गया। सब लोग प्रसन्न थे। हां, मोहन के पिताजी का स्वास्थ्य कुछ गड़बड़ जरुर था जो कि हर साल ही ठंडी के मौसम में हो जाया करता था। अतः सब लोग इसके अभ्यस्त थे और चिंतित नहीं थे। पर, इस बार मोहन की छुट्टी समाप्त होने का समय करीब आते आते उसके पापा का स्वास्थ्य और खराब होने लगा। मोहन ने पहले उनको स्थानीय अस्पताल में दिखाया। अपेक्षित सुधार न होने पर उनको एक अपेक्षाकृत बड़े अस्पताल में दिखाया। वहां भी उनके स्वास्थ्य में कोई खास सुधार नहीं आया। पिताजी के स्वास्थ्य का मामला अब जटिल होने लगा। उसे नौकरी पर वापस जाना था और पिताजी का इलाज की जरूरी था। अपने फौज द्वारा दी गई सुविधा का प्रयोग करते हुए उसने अपने पिताजी को अपने पड़ोस के मिलिट्री अस्पताल में दिखाया। आवश्यक प्रारंभिक जांच करने के बाद वहां के डॉक्टर ने उनकी स्थिति को गंभीर बताया और उनका सेना के बेस अस्पताल में ले जाने की सलाह दी। कोई और विकल्प था भी नहीं। अगले ही दिन मोहन के पिताजी को सेना के बेस अस्पताल में पहुंचा दिया गया। वहां पर उनका इलाज शुरू हुआ। जरुरी जाँच करने के बाद एक विशेषज्ञ डॉक्टर ने बताया कि उनकी किडनी ने ठीक से कार्य करना बंद कर दिया है। अतः खून की शुद्धता बनाए रखने के लिए डायलिसिस विधि का सहारा लेना पड़ा। वहां उनका इलाज चलता रहा और स्वास्थ्य में क्रमशः सुधार भी दिखाई पड़ने लगा। उत्साहित होकर मोहन ने उनके डाइट को सही करने के लिए डाइट विशेषज्ञ की

ISSN:2583-8849

सलाह ली और अगले दिन से उनके लिए अच्छे खाद्य पदार्थों को अस्पताल ले जाने का निर्णय लिया। मोहन अस्पताल में रात में तो रह नहीं सकता था इसलिए उस शहर में रह रहे अपने एक संबंधी के घर चला जाता था और अगले दिन सुबह फिर अस्पताल आ जाता था। उस दिन पिताजी ने रात का भोजन सही से किया था और दूध भी पिया था। वह तुलनात्मक रूप से बेहतर और प्रसन्न थे।

मोहन सुबह उनके लिए कुछ विशेष खाद्य सामग्री लेकर उत्साहित होकर अस्पताल पहुंचा। वार्ड में अंदर घुसते ही वह यह देखकर हैरान रह गया कि उसके पिताजी के बेड पर कोई और रोगी लेटा हुआ था। वह एक बार बाहर जाकर वार्ड को ध्यान से देखकर खुद को आश्वस्त किया कि वह सही वार्ड में ही घुसा था जहां उसके पिताजी भर्ती थे। पूछताछ करने पर बगल के भर्ती मरीज और उसी समय वहां पहुंची नर्स ने भी बताया कि उसके पिताजी को आधी रात को दिल का दौरा पड़ गया था। मोहन जानता था कि ऐसा ही दिल का दौरा लगभग एक सप्ताह पहले उनको गुप्त रूप से घर पर भी पड़ा था। मिलिट्री अस्पताल वाले विशेषज्ञ डॉक्टर ने भी उनकी जाँच को देखकर इसे भांप लिया था। नर्स के चेहरे पर अनहोनी के खामोश भाव महसूस किए जा सकते थे। उसने मोहन को बताया कि उसके पिताजी को आईसीयू में ले जाया जा चुका था। मोहन संवेदना शून्य अवस्था में आईसीयू की ओर भागा जो कि बिल्कुल बगल में ही था। वहां पर उसके पिताजी डॉक्टर और उनके सहायकों के एक दल से गिरे थे। वे अचेत अवस्था में थे। चिकित्सा के कुछ यंत्र उनके शरीर पर लगे हुए थे। उनकी सांसें डूब रहीं थीं और उनको उबारने का प्रयास युद्ध स्तर पर चल रहा था। मोहन आवाक सा सामने खड़ा था। सब कुछ देख रहा था परंतु उसे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था। डर, आशंका, दुख, चिंता, परेशानी कुछ भी नहीं। जैसे वह किसी हिंदी सिनेमा की दृश्य को देख रहा हो जहां वहां एक दर्शन मात्र है और कुछ भी नहीं। कुछ ही पलों में मशीन के पटल पर ऑडी तिरछी चल रही रेखाएं सीधी हो गई और मोहन के भावी सुख वाले बगिया में पहुँचने वाले पिताजी इस दुनिया से ही जा चुके थे। मोहन दुखी तो था लेकिन आश्वस्त था कि पिताजी पूरी तरह से संतुष्ट होंगे परलोक में भी क्योंकि उनको विश्वास है कि मोहन अपने सबसे छोटी बहन का विवाह भी धूमधाम के साथ कर लेगा।

ISSN:2583-8849

नवरंगी

मोटरसाइकिल किसी भी कंपनी की हो नवरंगी पास रखे हुए चाबियों के गुच्छे से कोई ना कोई चाबी उसमें लग ही जाती थी। यह चाबियां गाड़ी को स्टार्ट करने के काम में आती थी और उसके हैंडल में लगे हुए ताले को खोलने के काम में भी। यह था उसके रुचि और प्रतिभा का प्रमाण। वह बेटा तो अध्यापक का था पर पढ़ने में उसका मन कभी न लगा । पढ़ाई में तो उसे बचपन से ही कोई रुचि नहीं थी पर स्कूल से उसे बहुत लगाव था। पढ़ाई के अलावा वह सारे कार्यों को स्कूल में ही करना चाहता था।

उसे अपने जैसे लड़कों का एक समूह भी मिल जाता था और फिर समूह की क्षमता अपने आप ही बढ़ जाती है। कक्षा नवीं तक तो सरकारी स्कूल ने कभी उसे फेल नहीं किया और दसवीं की बोर्ड परीक्षा पास करना उसके लिए असंभव जैसा था। अब पास होने के लिए नक़ल का जुगाड़ ही एकमात्र सहारा था। इसके लिए किसी पहुंच वाले मास्टर से परिचय जरूरी था। नवरंगी इसके लिए पढ़ाई छोड़कर उनकी सेवा में लग गया जो उसका बेड़ा पार लगा दें। इसके लिए स्कूल से किसी की भी मोटरसाइकिल अपने चाबी वाले गुच्छे का प्रयोग करके वह ले लेता और निकल जाता उनसे मिले कार्य को निपटाने के लिए। विद्यालय बंद होने से थोड़ा पहले ही वह चुपके से ली बाइक को उसकी पुरानी जगह पर ही खड़ी कर देता। कई बार तो गाड़ियों का पेट्रोल भी वह समाप्त कर देता था जिससे सही मलिक को परेशान भी होना पड़ता। नवरंगी चरित्र से भी बहुत ही गिरा हुआ था। अनेक बार उसको इस कारण से बहुत अपमान भी सहना पड़ा और कभी-कभी तो मार भी खानी पड़ी। पर, उसके व्यवहार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था।

सारी तैयारी के बाद जब परीक्षा का समय आया तब प्रशासन नक़ल के खिलाफ बहुत ही सख्त हो गया। नकल नहीं हो पाई और वह फेल हो गया। इसी तरह से लगातार तीन वर्षों तक पढ़ाई के अलावा वह पास होने के लिए अन्य सारे कार्य करता रहा और फेल भी होता रहा। लेकिन पढ़ाई के प्रति वह कभी भी गंभीर नहीं हुआ। गाड़ी चलाने में तो उस्ताद था ही वह, अब पढ़ाई छोड़कर उसने रोडवेज की बस चलाने का काम प्राइवेट ड्राइवर की तरह शुरू किया। स्वाभाव के अनुसार वहां भी कुछ ही दिन में डीजल बेचने के लगातार मामले में पकड़ लिया गया और वहां से भी निकाल दिया गया। बस चलाते हुए उसका अनेक ड्राईवरों से परिचय हो गया था। उसने अब रोडवेज के बसों को रोककर खिलाने पिलाने वाला एक ढाबा खोल दिया। घटिया स्तर का सामान इस्तेमाल करने और वहीं पर देशी शराब बेचने के चक्कर में पुलिस ने उसको पकड़ लिया। उसको मारा पीटा पैसे भी लिए और उसके उसे कार्य को बंद करवा दिया। कुछ दिन बाद नवरंगी ने अपने घटिया दिमाग फिर से लगाया और एक गिरोह बनाकर मोटरसाइकिल चुरा कर बेचने का काम शुरू किया। कमाई हुई और कुछ ही दिन में इन पैसों से उसने एक पुरानी जीप खरीद लिया। इस जीप को सवारी गाड़ी के रूप में इस्तेमाल करने लगा। यह धंधा भी ज्यादा दिन न चल सका। बाइक चोरी के एक मामले में पुलिस तहकीकात करते हुए उसके पास तक पहुंच गई और उसे गिरफ्तार कर लिया। पुलिस से खुद को बचाने के लिए उसे अपने हराम की कमाई वाली जीप भी बेचनी पड़ी। उसके घर वालों को भी पुलिस के जाल से उसे बचाने के लिए इधर उधर से और पैसे

ISSN:2583-8849

उधार माँगने पड़े। तब जाकर नवरंगी कहीं बच पाया पुलिस कि पकड़ से। अब, नवरंगी ने नए सिरे से गाय-भैंस को खरीदने बेचने का व्यापार शुरू किया। इसमें भी धंधा ज़माने के बाद उसने चोरी करना शुरू कर दिया। दिन में घूमकर वह पशुओं को देखता उसके रात में बांधे जाने की जगह की जानकारी लेता और बातचीत में ही यह भी पता लगा लेता की मालिक रात में उससे कितने दूर पर सोता है। फिर कुछ दिन बाद अपने गिरोह कि गाड़ी इस्तेमाल करके पशु की चोरी कर लेता। अचानक फिर से उसकी मौज-मस्ती बढ़ने लगी। लेकिन इसका भी अंत हो गया। एक दिन रात को उसकी चोरी वाली गाड़ी गश्त लगाती पुलिस के घेरे में आ गई। बहुत भगाने के बाद भी पुलिस ने पीछा करके उसे पकड़ लिया। फिर वही, पकड़ा जाना, मारा पीटा जाना, घूस खिलाने का सिलसिला चला और लंबे खर्चे के बाद ही वह फिर से पुलिस से बच पाया।

अब तक उसने अपनी पत्नी बच्चों पर कोई ध्यान नहीं दिया था। वह अपने चोरी, बेईमानी चरित्र हीनता वाले कार्यों में ही लगा रहा था। उसके बच्चे भी अब किशोरावस्था में पहुंच चुके थे। बाप का प्रभाव बच्चों में होना ही था। उसकी सबसे बड़ी बेटी अपने से बहुत ज्यादा उम्र वाले दूसरी जाति के आदमी के साथ भाग गई । दूसरी बेटी का किसी तरह से विवाह हो पाया था। उसके ससुराल वालों को उसके पूर्व चरित्रहीनता का पुख्ता प्रमाण मिल गया तो उसको भी उन लोगों ने त्याग दिया। वह भी यहीं आकर नवरंगी के साथ ही रहने लगी थी। अब वह यहां का माहौल भी खराब करने लगी थी, इधर-उधर के लोगों के साथ गलत संपर्क बनाकर। उसका बेटा जो तीनों में सबसे छोटा था बहुत बदतमीज़ और मूर्ख था। वह इधर-उधर लड़ता झगड़ता रहता था और कभी-कभी उसकी पिटाई भी हो जाती थी। बच्चे अब बड़े हो गए थे। उनको नौरंगी की ढेर सारी बुराइयों का पता लग गया था। पत्नी व बच्चे अब नवरंगी को न कोई सम्मान देते थे और न ही कोई मतलब रखते थे उससे। और तो और अब उसे घर से खाना-पानी देना भी बंद कर दिया। हालत ये हो गई कि अब उसे अपने गांव के एक धोबी के घर पर रहना खाना और सोना पड़ता था जबकि, नौरंगी अपने गांव के सबसे ऊंची जाति का था। धोबी के घर वालों के साथ भी उसने कई बार झगड़ा और बदतमीजी की थी। पर, उन लोगों ने उसकी हालत पर दया करके उसे अपने घर रहने, खाने और सोने दिया। वह अब बीमार भी रहने लगा मानसिक और शारीरिक दोनों रूप से । धोबी परिवार उसकी दवा के लिए भी थोड़े बहुत पैसे अपनी क्षमता के अनुसार खर्च कर दिया करता था। दूसरे के घर रहने खाने और सोने की बात और समाज द्वारा इसका देखा जाना उसके लिए और घुटन कि बात हो गई। अब उसका और ज्यादा दिन चल पाना मुश्किल सा लगाने लगा। उसकी स्थिति दिन पर दिन गिरती ही जा रही थी। एक दिन वह रात को खाने के बाद जब सोया तो सुबह फिर जगा ही नहीं और उसकी नींद कभी भी न समाप्त होने वाली हो गई। चरित्रहीन और कर्तव्य से विमुख होने वाले उस व्यक्ति को एक धोबी की चौखट पर अपनी जान गंवानी पड़ी जबकि उसकी पत्नी और बेटा उसके बिलकुल पास ही थे।

काश! वह शुरू से ही मेहनत से पढ़ लिख लिया होता तो शायद कुछ विवेक बन ही जाता उसमें और उसकी जिंदगी को भी कोई अर्थ मिल जाता। उसे पराये चौखट पर जिल्लत भरी जिंदगी बिताते हुए अपने प्राण न त्यागने पड़ते वो भी अपने सगों के सामने ही।

प्रवक्ता हिंदी जवाहर नवोदय विद्यालय)
हैलाकांडी, असम (